International Journal of Applied Research 2016; 2(3): 825-827

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2016; 2(3): 825-827
www.allresearchjournal.com
Received: 21-01-2016
Accepted: 23-02-2016

Amit Raj
Research Scholar, Magadh University, Department of Pali Language, Bihar, India

Corresponding Author:
Amit Raj
Research Scholar, Magadh University, Department of Pali Language, Bihar, India

बुद्ध काल की सामाजिक एवं राजनीतिक विचार एक समीक्षा

Amit Raj

प्रस्तावना:
भगवान बुद्ध का जितना धार्मिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक व्यक्तित्व महत्त्वपूर्ण है, उतना ही उनका सामाजिक एवं राजनीतिक व्यक्तित्व भी महत्त्वपूर्ण है। सम्राट अशोक ने अपने राज्य शासन में भगवान बुद्ध के जिन राजनीतिक, सिद्धान्तों और तत्वों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया था वे आज भी उतने ही महत्त्वपूर्ण है। उसी प्रकार डॉ0 अम्बेडकर ने आधुनिक भारत के लोकतंत्र को भगवान बुद्ध के सिद्धान्तों का और तत्वों का जो आधार दिया है वह भारतीय संविधान और भारतीय लोकतंत्र सारे संसार के राष्ट्रों के लिए एक आदर्श बन गया है प्रेरणा बन गया है।
बुद्ध द्वारा उपदेशित राजनीति में नैतिक, चारित्रिक, बौद्धिक गुणों का विकास एवं नकारात्मक विषयों से वितर रहने पर बल दिया गया है, जिनमें कुछ की चर्चा यहां करना प्रासंगिक प्रतीत होता है।

राजनीति में कामभोगों के परित्याग :
मित्र के साथ झगड़ते हैं। वे वहाँ विवाद, कलह करते हैं, एक दूसरे पर हाथों से भी आक्रमण करते हैं, डंडों से भी आक्रमण करते हैं, षस्त्रों से भी आक्रमण करते हैं। वे वहाँ मृत्यु को प्राप्त होते हैं। या मृत्यु समान दुःख को प्राप्त होते हैं। कामभोगों के कारण ही ढाल तलवार लेकर संग्राम में दौड़ते हैं, युद्ध के लिए तैयार होते हैं, यही कामों के दुष्परिणाम है।
उसी प्रकार कामभोगों के कारण सेंध भी लगाते हैं। गाँव उजाड़कर ले जाते हैं, चोरी भी करते हैं, राहजनी भी करते हैं, पर स्त्रीगमन भी करते हैं, तब राजा उन्हें पकड़कर नाना प्रकार के दंड देते हैं। चाबुक से भी पिटवाते हैं, जुर्माना भी करते हैं, हाथ–पैर भी काटते हैं, आदि। इस प्रकार कामभोगों के कई दुष्परिणाम बताकर भगवान बुद्ध ने कामभोगों के कई दुष्परिणाम बताकर भगवान बुद्ध ने कामभोगों का निस्सरण कहा है। भगवान बुद्ध कहते हैं कि, जो कोई इस प्रकार कामों के आस्वाद, कामों के दुष्परिणाम, दुष्परिणामों से निस्सरण (छूटकारा), निस्सरण से उसे यथाभूत नहीं जानते, वह स्वयं कामों को छोड़ेगें, या दूसरों को वैसा करने के लिस शिक्षा देंगे, जिस पर चलकर वही पुरूष कामों को छोड़ेगा यह सम्भव नहीं है। जो कोई इस प्रकार कामों के आस्वाद, आस्वाद के दुष्परिणाम, दुष्परिणाम से छूटकारा (निस्सरण), से उसे यथाभूत जानते हैं, वह स्वयं कामों का त्याग करेंगे, यही सम्भव है। इस तरह से कुटदंत सुत्त में भगवान बुद्ध ने कहा है कि पहले कामभोगों के दुस्परिणामों को जानना जरूरी हैं और जो जानता है वही उससे मुक्त हो सकता है। उसी प्रकार भगवान बुद्ध ने इस सुत्त में स्पष्ट रूप से यह कहा है कि संसार में, राजा राजाओं में कलह, विवाद, संघर्ष का कारण कामभोग की भावना ही है। इसलिए हर किसी को कामभोगों का परित्याग करना चाहिए। आधुनिक राजनीतिक परिवेश में भगवान बुद्ध की यह शिक्षा बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

राजनीति में अकुशल कर्मो का परित्याग :
राजनीति में अकुशलता को त्याग समाज में, देश में, राष्ट्रों के बीच में कलह, विवाद, संघर्ष, अशांति का कारण है– अकुशल बातें, अकुशल व्यवहार मज्झिमनिकाय के ककचूपम सुत्त में भगवान बुद्ध ने अकुशल बातों के दुष्परिणाम बतायें हैं और उन्होंने कहा कि इसलिए भिक्खुओं, तुम भी अकुशल को छोड़ों। कुशल धर्मो में लगो। इस प्रकार तुम भी इस धर्म में वृद्धि, विपुलता को प्राप्त होंगे, बुराई को छोड़ों, वृद्धि को, विपुलता को प्राप्त होंगे। मतलब यह कि अकुशल कर्म करने से हानि होती है और कुशल कर्म करने से वृद्धि होती है, विकास होता है और मनुष्य विपुलता को प्राप्त होता है।
पालि त्रिपिटक साहित्य में ऐसे कई सुत्त हैं, जहाँ भगवान बुद्ध ने अकुशल बातें, अकुशल कर्मो के परिणामों की बड़े विस्तार से चर्चा की है और कुशल कर्मो की प्रशंसा की है। कुशल कर्मो से स्वयं व्यक्ति भी सुख का, आनंद का, शांति का अनुभव करता है और समाज से, राष्ट्र से संघर्ष, विवाद कलह, युद्ध की स्थिति का विनाश होता है।

भगवान बुद्ध ने समाज में राजनीति के महत्त्व को अस्वीकार नहीं किया है या उन्होंने राजनीति को, राजसत्ता को कोई सबसे बुरी चीज भी नहीं माना है। उन्होंने स्वयं राजनीति में कभी हिस्सा नहीं लिया था। लेकिन वे राजनीति को कुछ निश्चित तत्वों पर, सिद्धान्तों पर, स्थापित और विकसित करना चाहते थे। भगवान बुद्ध के शासन को समझने के लिए उनकी ही एक प्रसिद्ध गाथा है –

सब्ब पापस्य अकरणं, कुसलस्य उपसम्पदा ।
सचित परियोदपणं, एतं बुद्धान सासनं।।

अर्थात् सभी प्रकार के पाप यानी अकुशल बातों को न करना, कुशल बातों का सम्पादन करना, अपने चित्त को संयमित करना, यही बुद्धों का शासन है, शिक्षा है3 बुद्ध की इस प्रकार की शिक्षा को यदि जीवन में अपनाया जाता है तो व्यक्ति में, समाज में, राष्ट्रमें विवाद, संघर्ष, युद्ध जैसी स्थिति पैदा नहीं हो सकती।

प्रज्ञा से परखने की शिक्षा

भगवान बुद्ध के धम्मसासन में शील, समाधि और प्रज्ञा का बड़ा महत्व है। बौद्ध आचार्यो ने सम्पूर्ण बुद्धवचनों को इन तीन बातों में, तीन भागों में विभाजित किया गया है। शील, समाधि और प्रज्ञा पर आधारित भगवान बुद्ध की शिक्षा केवल व्यक्तिगत, विशुद्ध जीवन की और मुक्ति प्राप्त करने की चीज नहीं है। बल्कि भगवान बुद्ध को शील, समाधि और प्रज्ञा की शिक्षा आज के राजनीतिक जीवन में भी, राष्ट्रीय जीवन में भी शांति की स्थापना करने में भी बहुत ही उपयुक्त और महत्त्वपूर्ण है। किसी भी देश मे सुशासन की स्थापना के लिए, शांति और अमन–चैन की स्थापना के लिए जो शासक वर्ग है, जो राजनीतिक दलों के नेता हैं, कार्यकर्त्ता हैं, वे शील, समाधि और प्रज्ञा में स्थापित होने चाहिए। अगर वे शीलवान, चरित्रवान नहीं है, संयमी जीवन जीनेवाले नहीं है, प्रज्ञावान, बुद्धिमान, ज्ञानवान नही है तो लोककल्याणकारी राज्य का निर्माण करने में सक्षम नहीं है [4]

आज भी हमलोग भारत की और संसार की राजनीति में जो उतार चढ़ाव देख रहे हैं, जो उथल–पुथल देख रहे हैं, जो सत्ता संघर्ष, सत्ता पिपासा को देख रहे हैं, वह सत्ताधारियों के अनसुलझे दिलों दिमाग का ही परिणाम है।

संघ व्यक्ति से ऊपरः

भगवान बुद्ध ने मज्झिमनिकाय के दक्खिणविभंग सुत्त में संघ को व्यक्ति से ऊपर माना है। मतलब उन्होंने व्यक्ति से भी संघ को ज्यादा महत्त्व दिया है। आधुनिक राजनीतिक सिद्धातों में एक तंत्र और जनतंत्र के भी महत्त्व का वर्णन किया है तो दूसरी ओर समाजवाद का, समाजवादी मूल्यों का और जीवन प्रणाली का भी महत्व का वर्णन किया गया है। मतलब आधुनिक राजनीतिक विचारधारा में व्यक्ति के महत्त्व के साथ–साथ समाज, समूह, संघ को भी महत्त्व दिया गया है और माना गया है कि समाजवादी व्यवस्था के बगैर लोकतंत्र अधूरा है।

'दक्खिणाविभंग सुत्त' में कहा गया है कि, एक समय भगवान बुद्ध साक्य जनपद में कपिलवस्तु के न्याग्गोधाराम में विहार कर रहे थे तब महाप्रजापति गौतमी नये धुस्से (चीवर) के जोड़े को लेकर, जहाँ भगवान बुद्ध विहार कर रहे थे, वहाँ आयी। भगवान को अभिवादन करके एक ओर बैठ गई। एक और बैठी, महाप्रजापति गौतमी ने भगवान बुद्ध से कहा, भन्ते! आप अनुकम्पा करके इसे स्वीकार करें। ऐसा कहने पर भगवान बुद्ध ने महाप्रजापति गौतमी से कहा –

"हे गोतमी ! इसे संघ को दे दे। संघ को देने से भी मैं भी पूजित हूँगा और संघ भी। दूसरी बार भी गोतमी ने अनुरोध किया और दूसरी बार भी भगवान बुद्ध ने यही कहा। तीसरी बार भी गोतमी ने अनुरोध किया और भगवान बुद्ध ने तीसरी बार भी यही कहा।

भगवान बुद्ध के संघ में किसी भी प्रकार का वर्गवाद, वर्णवाद या जातिवाद नहीं था, कोई भी व्यक्ति संघ में सम्मिलत हो सकता था। भगवान बुद्ध के संघ को महासागर की उपमा दी गई है। जैसे विभिन्न प्रदेशों से बहकर आनेवाली नदियां सागर में आकर मिल जाती है। और सबका पानी एकरूप हो जाता है। उसी प्रकार संघ भी है। जो संघ में आता है वह अपनी जाति, गोत्र, कुल को भूलकर, त्यागकर संघ में मिल जाता है। वह जातिमुक्त, वर्णमुक्त, वर्गमुक्त हो जाता है। यही संघ की सबसे बड़ी विशेषता है।[5] आधुनिक काल में समाजवादी समाजव्य।

लोकतांत्रिक पद्धति

भगवान बुद्ध का संघ पूरी तरह से लोकतांत्रिक पद्धति को स्वीकार करता है। पालि विनयपिटक में भगवान बुद्ध ने भिक्खुसंघ के लिये, भिक्खुगणी संघ के लिए उपोसथ का विधान किया है। भिक्खु उपोसथ और भिक्खुणी उपोसथ की सारी कार्यवाही लोकतांत्रिक ढंग से ही होती थी। भगवान बुद्ध ने चतुद्दसी, पुण्णमासी और पक्ष की अष्टमी को उपोसथ करने की अनुमति दी थी। भगवान बुद्ध द्वारा भिक्खु संघ और भिक्खुणी संघ को उपोसथ का और अधिक से अधिक परिशुद्ध बनाये, रखने का प्रयास था। आज को लोकतांत्रिक व्यवस्था में, शासन प्रणाली में भी इसका निश्चित रूप से महत्त्व है। राजनीतिक नेता, कार्यकर्त्ता विशुद्ध चरित्रवान बनें, भ्रष्टाचार से मुक्त रहें, अपनी जिम्मेदारी को समझें, अपने दायित्व को समझे इसके लिए वे नियमित रूप से, सांघिक रूप से इकट्ठा होते रहे तो निश्चित रूप से देश में समाज कल्याणकारी, जनकल्याणकारी राजनीति की बुनियाद मजबूत हो सकती है।

विनयपिटक के भिक्खू–पातिमोक्ख के निदान में भिक्खु संघ के उपोसथ की कार्यवाही का विस्तार से ब्यौरा दिया गया है। उसी प्रकार भिक्खुणी पातिमोक्ख के निदान में भी भिक्खुणी संघ के उपोसथ की कार्यवाही का विसतार से ब्यौरा दिया गया है6

राजनीति में अहिंसा और शांति की पद्धति

भगवान बुद्ध की शिक्षा के कई महत्त्वपूर्ण अंग है। आधुनिक लोकतंत्र का आधार है समता, स्वतंत्रता, बन्धुता और सामाजिक न्याय। भगवान बु;द्ध की शिक्षा भी यही है। भगवान बुद्ध की शिक्षा भी यही है, उनके धम्म का आधार भी यही है। भगवान बुद्ध की यह शिक्षा सामाजिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है और राजनीतिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। उसी प्रकार भगवान बुद्ध की शिक्षा में, धम्म में अहिंसा अथवा हत्या न करना, हत्या करने को प्रेरित न करना को भी बड़ा महत्त्व है। यह उनकी शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। डॉ0 अम्बेडकर 'भगवान बुद्ध और उनका धम्म' में लिखते हैं कि अहिंसा का करूणा और मैत्री से अत्यंत निकट का संबंध है। उन्होंने भगवान बुद्ध की अहिंसा की संकल्पना को बहुत ही नये ढंग से परिभाषित किया है। भगवान बुद्ध की अहिंसा की संकल्पना का निश्चित रूप से शांति की संकल्पना के साथ निकट का संबंध है। अहिंसा का दूसरा अर्थ शांति ही हो सकता है। आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था में अहिंसा और शांति का बड़ा महत्त्व है। मानव समाज का अस्तित्व ही शांति और अहिंसा पर टिका हुआ है।

एक समय भगवान बुद्ध बड़े भिक्खुसंघ के साथ खाणुमत में विहार कर रहे थे। कुटदन्त ब्राह्मण भगवान बुद्ध से मिलने के लिए गया था और उसने भगवान बुद्ध को अपनी यज्ञ करने की बात कही। तब भगवान बुद्ध ने उस कुटदन्त ब्राह्मण को महाविजित जातक का उपदेश दिया और हिंसक यज्ञ का विरोध किया था। कुदन्त सुत्त में भगवान बुद्ध का उपदेश अहिंसा, शांति और प्रजा के कल्याण की दृष्टि से आज की राजनीति का निश्चित रूप से मार्गदर्शक है।

इस तरह से भगवान बुद्ध की शिक्षाओं में आधुनिक राजनैतिक एकता और शांति के लिए कई मार्गदर्शक संकल्पनाएँ है। सम्पूर्ण

पालि–तिपिटक बुद्ध के विचारों से भरा हुआ है। बुद्ध की शिक्षाएँ आज के समाज के लिए निश्चित रूप से मार्गदर्शक है।

आज सभी लोग इस बात को स्वीकार करते हैं कि संसार में सामाजिक एकता के साथ राजनीतिक एकता की बात होनी चाहिए, सभी समाजों और देशों में शांति की बात होनी चाहिए क्योंकि राजनीतिक वेदना, विघटन और अशान्ति मानव समाज को विनाश के किसी भी कगार पर जाकर खड़ा कर सकती है। यह किसी भी समाज के देश के विकास के लिए हितकारी, लाभदायी नहीं है। अशांति जो विनाश की आग तरह होती है जो सब कुछ नष्ट कर देना है। मानव समाज के इतिहास में इस तरह के कई उदाहरण दिखायी देते हैं इस तरह की स्थिति में भगवान बुद्ध के किस तरह के विचार उनके सिद्धांत, आधुनिक मानव समाज में एकता और शांति को स्थापित के लिए उपयोगी साबित हो सकते हैं।8 यही महत्त्वपूर्ण सवाल है। भगवान बुद्ध आज इस संसार में नहीं है, लेकिन उनके द्वारा दिए गए उपदेश, विचार, राजनीतिक चेतना आधुनिक भारत ही नहीं बल्कि पुरे संसार में एकता, अखण्डता और शांति की स्थापना आदि चिन्तन के विषय अवश्य है।

संदर्भ सूची

1. अम्बेदकर, डॉ0 बी0 आर0, भगवान बुद्ध और उनका धम्म (हिन्दी) डॉ0 भदन्त आनन्द कौसल्यायन संस्करण, 2008 सम्यक प्रकाशन, नागपुर पृ0 49,50
2. सांस्कृतयान राहुल, दीघनिकाय (हिन्दी) (कूटदंत सुत) पृ0 – 51
3. सांस्कृतयान राहुल, मज्झिमनिकाय, महादुक्खन्ध, सुत (हिन्दी) पृ0– 44
4. बुद्ध जीवन और दर्शन, सद्धातिस्स, अनुवाद–विठ्टलदास मोदी, पृष्ठ–74–75 सस्ता साहित्य मण्डल, तृतीय संस्करण 1986 दिल्ली।
5. मज्झिमनिकाय, महादुक्खक्खन्ध सुत (हिन्दी) पृ0– 51
6. सांस्कृत्यान राहुल, विनयपिटक (हिन्दी) पृ0– 179
7. अम्बेदकर, डॉ0 बी0 आर0, भगवान बुद्ध और उनका धम्म (हिंदी), पृ0– 322
8. वही, पृ0 348